Original Research Paper Hindi

कवि भवानीप्रसाद मिश्र : एक पुनर्पाठ

डॉ राजेश कुमार | सहायक प्राध्यापक (रामलाल आनंद कॉलेज) दिल्ली विश्वविद्यालय

KEYWORDS

हिन्दी साहित्य में समकालीन कविता अपनी रचनात्मक विशिष्टता के कारण जानी जाती है। सामाजिक प्रतिबद्धताओं से जुड़ी इस काव्यधारा को अनेक कवियों ने अपनी सृजनात्मक ऊर्जा से सिंचित किया। इन्हीं कवियों मे मुख्य रूप से भवानीप्रसाद मिश्र अपनी व्यापक अनुभूतियों को जनसामान्य तक पहचाँने का कार्य करते हैं। सामाजिक प्रतिबद्धताओं से जुड़ा मिश्र जी काव्य संसार सहज भाषा के माध्यम से जन समुदाय पर व्यापक प्रभाव डालता है।

कवि भवानीप्रसाद मिश्र समकालीन परिस्थितियों के संदर्भ में काव्य सृजन करते हैं वे सीधे चेतना को उजागर करते हैं। अत: मिश्र जी चेतना के कवि हैं। मिश्र जी की कव्य संरचना असाधारण प्रकृत्ति की है, जिसमें काव्य सौंदर्य अपने जटिल रूप में दिखाई देता है। यह उनके शब्दानुशासन, आचरण और संवेदनाओं के संयोजन से निर्मित हुआ है। इसलिए इनकी कविता शब्दों की सहजता को धारण करके भी कठिन है। मिश्र जी के सभी काव्य संग्रह सामाजिक अनुभव की गहरी संवेदना के साथ जुड़े हुए हैं। इनकी सभी रचनाओं में समसामयिक बोध दिखाई देता है। भाव और विचार में गांधीवादी दर्शन के साथ-साथ रचनाओं में मानवीय पहलुओं पर बल दिया गया है। अत: मिश्र जी की कविताओं में मानवीय परिवेश का संयोजन है। इनके लेखनकाल का प्रारम्भिक समय बड़ा विपरित था, जो पूजीवादी पाश्चात्य संस्कृति शिक्षा और साहित्य की प्रतिक्रिया के रूप में दिखाई देता है, परन्तु स्वयं मिश्र जी के उपर भारतीय कवियों कालिदास, रविंद्रनाथ के अलावा वर्ड्सवर्थ, शैली, ब्राउनिंग आदि की सौंद्रर्य चेतना का प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ पर यह तथ्य विशिष्ट महत्व रखता है कि मिश्र जी का कव्य सौंदर्य उपरोक्त कवियों से अलगाव रखता है। इनका सौंदर्य विधान नारी में न होकर सम्पूर्ण मानवता के संदर्भ में है, जिसे समाज के अंगों, लोक-परिवेश और प्रकृति में समान रूप से देखा जा सकता है। वे अपने अनुभवों का प्रयोग करके जिंदगी की व्यापकता को कविता में उतार कर रख देते है। अभिव्यक्ति के इस यथार्थ प्रयोग के कारण ही इनके काव्य संसार को कविता में जिंदगी और जिंदगी में कविता के रूप में देखा जा सकता है -

जीवन परिचय -

भवानीप्रसाद मिश्र जी का जन्म २३ मार्च १९१३ को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गांव में हुआ। इनका परिवार पारम्परिक मध्यवर्गीय साधारण कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार से संबंधित था। अपने बचपन के परिवेश और उसके प्रभाव के संबंध में स्वयं मिश्र जी ने 'दूसरा सप्तक' के कवि वक्तव्य में लिखा है कि छोटी सी जगह रहता था, छोटी सी नर्मदा के किनारे, छोटे से पहाड़, विंध्यांचल के आंचल में, छोटे छोटे साधारण लोगों के बीच, एकदम घटना विहिन, अविचित्र मेरे जीवन की कथा है, साधारण मध्यवित्त के परिवार में पैदा हुआ, साधारण पढ़ा लिखा और काम जो भी किए वे भी असाधारण से अछूते, मेरे आसपास के तमाम लोगों की सी सुविधाएं, असुविधाएं मेरी थी। सहजता के साथ अनुमान लगया जा सकता है कि साधारण समाज और प्राकृतिक परिवेश ने निश्चित रूप से बचपन से ही मिश्र के स्वभाव को निर्मित किया है। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा खंडवा, बैतूल और सुहागपुर से ग्रहण की जहाँ पर उनका बचपन बीता। नरसिंहपुर और होशंगाबाद से हाई स्कूल करने के बाद १९३४-३५ में मिश्र जी ने राबर्टसन कॉलेज जबलपुर से स्नातक की परीक्षा पास की। स्नातक की पढ़ाई के दौरान ही मिश्र जी तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित रहे, जिसके फलस्वरूप उन्होंने आगे की पढ़ाई का विचार छोड़कर गांधी जी के वैचारिक आन्दोलन से जुड़ गये जो उस समय नवयुवकों में चेतना को जगा रहे थे। मिश्र जी ने एम. ए. की शिक्षा इसलिए भी नहीं ली कि कहीं वह सरकारी नौकर बनकर न रह जाये। अपने पिता की इच्छाओं का आदर करते हुए उन्होंने अपनी आजीविका चलाने के लिए पाठशाला खोली, जिसमें उन्होंने गांधी जी के सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षा देना आरम्भ किया। इस पाठशाला की शिक्षण पद्धति में सामाजिक मूल्यों पर जोर दिया गया।

अपनी उच्च शिक्षा के दौरान भवानीप्रसाद मिश्र गांधी जी से प्रभावित रहे। सन १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में अन्य युवकों की तरह उन्हे भी गिरफ्तार किया गया। जिसके फलस्वरूप उन्हे दो वर्ष, आठ महिने, आठ दिन का कारावास मिला और १९४५ में वे जेल से छूटे। अपने कारावास के दिनों में ही बंगला भाषा सीखकर गुरूदेव रविंद्र नाथ टैगोर की रचनाओं का अध्ययन किया। गांधी जी

से वे पहले ही प्रेरित थे। इस पर रविंद्रनाथ की रचनाओं ने उनके व्यक्तित्व पर गहरा असर डाला और रविंद्र और गांधी का यह संयोग मिश्र जी की कृतियों और सामाजिक व्यवहारों में पूरे जीवनभर बना रहा। सन १९४५ में जेल से छूटने के बाद वे चार-पांच साल महिला आश्रम वर्धा में शिक्षक के तौर पर रहे। इसके बाद १९५०-५१ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में रहे। १९५०-५२ तक उन्होंने हैदराबाद से निकलने वाली हिंदी मासिक पत्रिका 'कल्पना' का संपादन किया। इस बीच इन्होंने कई फिल्मों के लिए गीत व संवाद लेखन का कार्य किया। सन १९५६-५८ तक मिश्र जी ने आकाशवाणी बम्बई व दिल्ली से हिंदी के कार्यक्रमों का संचालन किया। इसी के बीच वे आकाशवाणी बम्बई केंद्र में हिंदी अनुभाग में प्रभारी के पद पर कार्यरत रहे। सन १९५८-१९७२ तक इन्होंने सम्पूर्ण गांधी वांग्मय का संपादन किया और अपने जीवन के अंतिम समय तक वे 'गगनांचल' के संपादक रहते हुए २० फरवरी १९८५ को इनका स्वर्गवास हो गया।

रचना कर्म -

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने काव्य लेखन सन १९३७ के आसपास प्ररम्भ किया। हाई स्कूल की शिक्षा के दौरान ही इनकी कुछ कविताएं पं. ईश्वरीप्रसाद शर्मा के संपादन में निकलने वाले 'हिंदु पंच' (कलकत्ता) में प्रकाशित हो चुकी थी। सन १९३२-३३ ई. में मिश्र जी माखनलाल चतुर्वेदी के संपर्क में आए और उनकी अनेक कविताओं को चतुर्वेदी जी ने 'कर्मवीर" में प्रकाशित किया। जैसे ही अज्ञेय जी ने प्रभात शर्मा के पत्र 'आगामी कल' में मिश्र जी की कविताओं को पढ़ा तो वे प्रभावित हुए बीना नहीं रह सके और उन्होंने मिश्र जी से 'तार सप्तक के लिए रचनाएँ आमंत्रित की, परन्तु उस समय जेल में होने के कारण वे रचनाएँ नहीं भेज सके। जेल से छूटने के बाद इन्होंने अमृतराय द्वारा संपादित 'हंस' के लिए कविताएँ लिखी। इसके बाद पुन: अज्ञेय जी ने 'दूसरा सप्तक' के लिए इनसे रचनाएं मांगी और फिर मिश्र जी कविता लेखन के साथ नियमित रूप से जुड़ गये।

भवानीप्रसाद मिश्र जी ने जिन काव्य संग्रहों का सृजन किया, वे इस प्रकार हैं-

1. गीत फरोश (१९५३)
2. चकित है दु:ख (१९६८)
3. अंधेरी कविताएं (१९६८)
4. गांधी पंचशती (१९६९)
5. बुनी हुई रस्सी (१९७१)
6. खुशबू के शिलालेख (१९७३)
7. व्यक्तिगत (१९७४)
8. अनाम तुम आते हो (१९७६)
9. परिवर्तन जिए (१९७६)
10. त्रिकाल संध्या (१९७८)
11. शरीर कविता फूल और फसलें (१९८४)
12. तूस की आग (१९८५)

मिश्र जी ने 'कालजयी' नाम का एक खण्डकाव्य भी लिखा है -

पुरस्कार -
भवानीप्रसाद मिश्र जी को अपने काव्य संग्रह 'बुनी हुई रस्सी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। इसके अतिरिक्त 'परिवर्तन जिए' को उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया और इसी कृति को 'अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशन संघ' और 'आथर्स गिल्ड' ने संयुक्त रूप से श्रेष्ठ काव्य-संग्रह की श्रेणी में रखा।

विषय-पक्ष :-

भवानीप्रसाद मिश्र अपनी रचनाओं के माध्यम से अनुभवों का आख्यान प्रस्तुत करते हैं। काल्पनिक अभिव्यक्ति से दूर कविता की विषय-वस्तु अत्यंत व्यापक है। जीवन के सारे संदर्भ अपने वास्तविक परिवेश में गीतों का आधार बने हैं। साधारण-सी दिखाई देने वाली कविताएं मिश्र जी ने असाधारण शैली और शिल्प के साथ गढी है। अभिव्यक्ति का सहज रूप भी इनमें है और प्रभाव का असाधारण रूप भी इनमें दिखाई देता है। अनुभवों के परिदृश्य में ही मिश्र जी की कविताओं का वस्तुपरकता के साथ विश्लेषण किया जा सकता है ।

मिश्र जी के प्रारम्भिक संग्रह 'गीत फरोश' में सामाजिक संदर्भों की यथार्थ अभिव्यक्ति है। आजादी के बाद भी ग्रामीण भारत की दुर्दशा कम नहीं हुई। सामान्य जन का निरीह जीवन अभावग्रस्त होकर घुटन भरा है। सामाजिक विषमताओं में आम आदमी के शोषण को निरंतर बना रखा है। 'गांव' नामक कविता में मिश्र जी ने सामान्य जन कि विपन्नता को यथार्थ बिम्ब के साथ चित्रित किया है -

गांव इसमें झोंपड़ी है, घर नहीं है,
झोंपड़ी के फटकिया है, दर नहीं है,
धूल उड़ती है, धुएं से दम घुटता है,
मानवों के हाथ से मानव लुटा है।
सो रहा है शिशु कि मां चक्की लिए है,
पेट पापी के लिए पक्की किए है।
फट रही छाती ।

कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन की भयावह त्रासदी को चित्रित किया है। हताशा भरा जीवन व्यक्ति की संभावनाओं के विकल्पों का निर्माण नहीं होने देता, जिससे जीवन की अनुभुतियां उदासी भरी दिखाई देती हैं। इसके बावजूद कवि भारतीय समाज में जीवंत तत्वों को खोजते है, यही हमारी पुरातन संस्कृति का सकारात्मक पक्ष है। चेतना और विकास की यह भाव धारा मिश्र जी की कविताओं से उद्भुत होती है। समाज की प्रगति में बाधक तत्वों व कारकों को कवि समष्टि रूप नहीं देना चाहते, उनकी इच्छा है कि ये कारक क्षण भंगुर हो मानव जीवन की शाश्वता बनी रहे -

प्रतीक हों, अगर ये
किसी सार्वजनिकता के
तो प्राणपण से मांगता हूं
मैं इनकी क्षणिकता
टांगता हूं मैं अपने को शूली पर
कि वे ये प्रतीक
मेरी अवस्था के
सार्वजनिकता के प्रतीक
न बने ।
(बुनी हुई रस्सी, पृ.१३७)

भवानीप्रसाद मिश्र ने अपने काव्य में मनुष्य और प्रकृति के संबंधों को कशलता के साथ संयोजिता किया है। प्रकृति की राँशि- दृश्यावलियों में मन की गति दिखाई देती है। इन्होंने प्रकृति की अवस्थाओं और उसके क्रिया-कलाप के सौंदर्य का चित्रण किया है। कहीं आकाश का नीलापन, तो कहीं किरणों का सुनहलापन प्रकृति के सौंदर्य की सृष्टि करता है। प्रकृति के सभी स्रोतों से कविता प्रतिध्वनित होकर मानव मन को मुग्ध करती हैं। प्रकृति के ये विविध रूप मानव-जीवन के नियामक हैं और कवि भी इसे इसी रूप में देखता है -

गाढ़ा नीला आसमान
तेज चमकीला सूरज
तरल पानी
सरल हवा
ठोस धरती
हम पांचों
काल को जानते हैं।

(तूस की आग, पृ. ७५)

'सतपुड़ा के जंगल' कवि की प्राकृतिक परिवेश को चित्रित करने वाली प्रसिद्ध कविता है। इसमें कवि ने अंचल विशेष का यथार्थ बिम्ब प्रस्तुत किया है। घने जंगल की सूक्ष्म से सूक्ष्म दृश्यावलियों को कविता के कलेवर में पिरो दिया है- शाल, पलाश के पेड़, सांप-सी काली लताएं, शेर की गर्जना के झुरमुट और काँस, अजगरों से भरे जंगल, झरने, नाले, जंगली पक्षी व जीव आदि को बड़ी तन्मयता के साथ मूर्तता दी है -

झाड़ ऊंचे और नीचे
चुप खड़े हैं, आंख मींचे
घास चुप है, कास चुप है
मूक शाल, पलाश चुप है।
बन सके तो धंसो इनमें
सतपुड़ा के घने जंगल,
नींद में डूबे हुए-से
ऊंघते, अनमने जंगल ।

(दूसरा सप्तक, पृ.१०)

मिश्र जी ने प्रकृति का व्यावहारिक रूप प्रस्तुत किया है जिसमें जीवन के दैनिक संदर्भों की और संकेत किया है। मनुष्य अपने आसपास की प्रवृति से ही प्रेरित होकर सृजनशील बनता है। प्रकृति मनुष्य की योग्यता का निर्माण करती है जिसके बल पर वह विकल्पों का चुनाव करने में सक्षम होता है -

अगर मैं पंछी होता
तो शायद ही बैठता कभी
मोटी किसी शाखा पर
पहुँचता जिस वृक्ष के पास
हमेशा चुनकर चक्कर काटकर

(खुशबू के शिलालेख, पृ.२३)

प्रकृति के माध्यम से कवि ने मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है। कथ्य की इस प्रतिबद्धता में आत्म चिंतन, जीवन मूल्य, समष्टि चिंतन, जीवन जगत्त से जुड़ाव व दर्शन आदि को असाधारण मन:स्थितियों के रूप में रेखांकित किया है। घोर निराशा के वातावरण में भी जीवन-संपृक्ति बनी हुई है और जीवन के नये धरातल का निर्माण करती है -

चाहत हूँ इससे पीछा छूटे
तो टूटे कोई नया तारा
किसी अंजाने आकाश में
लगाकर महानाश में
डूबकी
किसी नई देह का मोती पाऊं ।

(अंधेरी कविताएं, पृ.११८)

समष्टिपरकरता कवि की रचनात्मकता विशेषता रही है कविता का भाव व्यापक और विस्तृत है मिश्र जी ने स्वयं भी कहा है 'वैसे व्यक्तिगत क्या है, मैं खुद भी व्यक्तिगत नहीं हूं तो मेरी कविताएं क्या होंगी ?' स्पष्ट है कि कविताओं में समाज में भी अपने भावों और विचारों को व्यक्तिगत होने से बचाता है और पूरे समाज की आकाक्षाओं को साधने का प्रयास करता है। उनका मानना है कि भावनाओं की समष्टिपरकता ही मनुष्य की दशा और दिशा को परिवर्तित करती है -

मैं खिड़की खोलते ही सहज भाव से
समूची फिजा में घुल गया हूं
कमरे में खड़ा हूं मगर
कचनार के फूलों की तरह
जैसे रात भर टपकते रहकर
ओस से धूल गया हूं
और गिला हूँ
वृक्षों के वृतों की तरह लचीला हूं
झूम रहा हूं
कमरे में बोहर की हवा की तरह
लहर-लहर घूम रहा हूं ।

(व्यक्तिगत, पृ. 59)

भवानीप्रसाद मिश्र मानव-जीवन से कृत्रिम व्यवहार को नष्ट कर देना चाहते है। इसी के कारण असामान्य स्थितियां पैदा होती हैं। भावी जीवन के निर्णय मनुष्य की क्षमता को शिथिल करते हैं। इसलिए

कवि अपेक्षा करते हैं कि मनुष्य सामाजिक दायित्व और व्यवहारों को जुबान की कृत्रिम भाषा से बंद करे। आदमी का एक दूसरे के प्रति व्यवहार शारीर की भावभंगिमाओं से भी झलकना

चाहिए। शरीर की भाषा भावनाओं की विशुद्ध अभिव्यक्ति होती है -

जीभ की जरूरत नहीं है
क्योंकि कहकर या बोलकर
मन की बातें जाहिर करने की
सूरत नहीं है .....
बेचैनी घोलेंगी
हमारी आंखें
वातावरण में .....
पहाड़ की छाती से
फूटने लगते हैं
झरने ।

(शरीर कविता फसलें और फूल)

मिश्र जी ने देश में घटित समसामयिद घटनाओं से कभी भी मुहँ नहीं मोड़ा। 'त्रिकाल संध्या' नामक काव्य संग्रह समसामयिक का बोध लिए है। आपातकाल के दौरान लिखि गई इन कविताओं की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि आपातस्थिति के दिनों में मिश्र जी ने हर रोज-सुबह, दोपहर और शाम को तीन कविताएं लिखने का संकलप लिया था। यह इनकी कवि क्षमता और समय प्रतिबद्धता के साथ चिंतन का भी परिचय कराती हैं। तत्कालीन देश के विपरीत माहौल को कवि ने निम्नलिखित गीत पंक्तियों में चित्रित किया है -

कैसा मजा है
मुख खोला भर कि तैयार कोई सजा है।
दु:शासन को अनुशासन-पर्व कहो तो ठीक
और यह भी कहाँ कि एक ही व्यक्ति
देश है एक ही व्यक्ति प्रजा है
यह कैसा मजा है।

(त्रिकाल संध्या, पृ. 120)

कवि समाज निर्माण के प्रस्तोता हैं। मानवीय आदर्शों के प्रति निष्ठा उनकी प्राथमिकता है। सामाजिक मूल्यों के संरक्षण का प्रयास वे हर समय करते हैं। समाज में सत्य का आचरण हो, तथा हिंसा का स्थान न हो, भ्रातृभाव का विकास और समाज प्रगति और विकास के रास्ते खुलें और प्राणियों में सद्भावना का विकास हो। लोक धर्म की ये संस्कृति मिश्र जी में गांधी जी के प्रभाव से आयी है -

बसे वह प्यार की बस्ती
कि जिसमें हर किसी का दु:ख मेरा शूल हो जाए
मुझे तिरसूल भी मारे कोई यदि दूर करने में उसे
तो फूल हो जाए।

(गांधी पंचशती, पृ.४३)

'गीत फरोश' मिश्र जी की महत्वपूर्ण कृति है। इसके गीत विविध प्रवृतियों का बोध कराते हैं। अर्थात इसमें गीतों का विविध रूप है। संग्रह के गीतों में कहीं कवि का दायित्वबोध उभर कर आता है जो उनकी काव्य-चेतना का परिचय देता है तो कहीं मनुष्य को प्रकृति के परिवेश में ले जाकर मधुर स्मृतियों को उभरते हुए देखा जा सकता है। भौगोलिक प्राकृतिक सौंदर्य में वृद्धि करते हुए सतपुड़ा, विंध्याचल, रेव, बरसात, फागुन, सूरज, चंद्रमा, फूल और लहरों का दृष्टांत मन को विभोर कर देता है। इसी संग्रह में बहुत सारे गीत सामाजिक प्रतिबद्धताओं का निर्वाह करते हुए लोक-जीवन के यथार्थ

को अभिव्यक्ति देते हैं। मिश्र जी ने अपने गीत रूपों में विशुद्ध भारतीय संदर्भों को चित्रित किया है। यह इनकी काव्य साधना का सामाजिक विस्तार है। जैसा कि उपर कहा गया है प्रस्तुत काव्य संग्रह में गीत विविध प्रकृति के हैं जिसमें राष्ट्रीयता और गांधीवाद के भी दर्शन हिते हैं, जहां मनुष्य की पीड़ा को व्यक्त करने में कवि कर्म की सार्थकता दिखाई देती है-

मैं कृषकों का बोल बनूं प्रेयसी
तू उसकी वाणी बन
मैं सत्य रहूं, तू सुंदर हो,
मैं शिव, तू कल्याणी बन।

(गीत फरोश, पृ. २९)

लेखन कर्म में फैले बाजारवाद को देखकर कवि बहुत उदास है। निराश मन से मिश्र जी महसूस करते हैं कि पूंजीवादी संस्कृति में कला और साहित्य की विधाएं अपनी अस्मिताओं को खोती जा रही हैं। भोगवादी सभ्यता ने कला को सिनेमा और मनोरंजन का उपकरण मानकर इसे निर्जीव करने का प्रयास किया है। समाज से अपेक्षित सम्मान के अभाव में कवि बाजारवादी सोच के साथ रचना कर्म करने लगा जिससे कविता की नैसर्गिकता नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया। पूंजीवादी समाज के प्रभाव से क्षुब्ध होकर कवि अपनी वेदना को इस रूप में व्यक्त करते हैं -

जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचत्ता हूँ
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ
जी पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पर बाद-बाद में अक्ल लगी मुझको
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान।
(पृ. १६६)

जीवन की भयानक विषमताओं को भवानीप्रसाद मिश्र जी ने अपने दूसरे प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'चकित है दु:ख' में प्रस्तुति दी है। इस संग्रह की कविताओं में कवि का अंतर्विरोध दिखाई देता है।

आशावादी दृष्टिकोण, उदासी, निराशा और दासता का स्वर भी गूंजता नजर आता है। यह आश्चर्यजनक स्थिति देश की विषम व कटु अनुभूतियों ने पैदा की है। यह काव्य-संग्रह मिश्र जी 'जीवन में कमाया हुआ सत्य' के रूप में प्रस्तुतकरते हैं। प्रस्तुत संग्रह के कई गीत में सामाजिक चेतना का ठोस रूप मनुष्य के अंदर जिजीविषा का निर्माण दिखाई देता है -

बाजार भी जैसे
सन्नाटा है जैसे बहरे के लिए
मेंहदी जैसे
निरर्थक है चेहरे के लिए
ऐसी हो गयी है जिंदगी
खाली और खस्ता
मेरे नजदीक।
(पृ. ११४)

'बुनी हुई रस्सी' नामक काव्य-संकलन भवानीप्रसाद मिश्र जी का साहित्य अकाद्मी द्वारा पुरस्कृत संग्रह है। यह भावनाओं की मार्मिकता और अभिव्यक्ति को धारण करने वाले गीतों का संयोजन है। इसमें कवि के रचनात्मक दायित्व के सामाजिक अनुभव हैं, अत: कविता का विषय अपने प्रौढ़ रूप में दिखाई देता है। कविताओं में संवेदनाओं की गहराई और सूक्ष्मता को असाधारण गति के साथ उतारा है, रचना पूरी सामर्थ्य के साथ पाठक को प्रभावित करती है। जीवन के व्यावहारिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए कवि का अनुभव झलकता है -

फर्क नहीं कर पा रहा हूँ मानों
घने कोहरे जैसे इस अँधेरे में
मैं मेरे और तेरे में
और यह स्थिति
दर्शन से नहीं
अदर्शन से पैदा हुई है।
(पृ. १२३)

शिल्प पक्ष-

भवानीप्रसाद मिश्र की रचनाओं में अभिव्यक्ति का शिल्प नवीन और सरल है। मिश्र जी प्रतिभा सम्पन्न कवि रहे हैं। इसलिए शिल्प माध्यमों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। विषय पक्ष की तरह शिल्प पक्ष में भी कवि अपनी सहजता और प्रभाव को बनाए रखते हैं। इन्होंने अपनी कविता में भाषायी प्रयोग बड़ी विशिष्टता के साथ किया है- शब्दों का नये संदर्भों में प्रयोग, बोलचाल की भाषा का प्रयोग, अर्थगत ध्वनियां आदि के संयोजन से सुगठित भाषा अभिव्यक्ति के प्रभाव को बढाती है। 'बुनी हुई रस्सी' की भूमिका में स्वयं कवि कहते हैं- 'मैं जो लिखता हूं उसे बोलकर देखता हूं और बोली उसमें बजती नहीं है तो मैं पंक्तियों को हिलाता ढुलाता हूं। बोल चाल की हिंदी मेरी ताकत है।' स्पष्ट है कि बोलचाल हिंन्दी के प्रयोग से ही सहजता बनी रहती है, इसी कारण शब्द विधान मिश्रित बन पड़ा है जिसमें तत्सम, तदभव, मुहावरे और लोकोक्तियां तथा विदेशी और लोक शब्दों का भी प्रचुर प्रयोग किया है -

जिसे भी रंगना चाहो
रंगों आज अपने रक्त से
आंखे मत चुराओ वक्त से
हर बात का वक्त होता है

(त्रिकाल संध्या, पृ.१८)

मिश्र जी की कविताएं अधिकतर गेय रूप में हैं इस कारण से उनमें संगीतात्मकता और माधुर्य जैसे गुणों का आना स्वभाविक है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी रचनाओं मे अप्रस्तुत योजना को प्रभावी ढंग से शिल्प को विशिष्टता प्रदानकी है। कवि ने पारंपरिक उपमानों का प्रयोग न करके विषय की प्रकृति के आधार पर

मौलिक उपमानों का प्रयोग किया है- प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों के अलावा जीवन जगत के उठाये गए उपमानों का भी कवि ने प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। निम्नलिखित पंक्तियों में देखा जा सकता है कि किस तरह प्राकृतिक उपमानों का समुच्चय रूप विशेष प्रभाव के साथ प्रस्तुत है -

बूँद टपकी एक नभ से
और जैसे पथिक
छू मुस्कान चौंके और घूमे
आँख उसकी जिस तरह
हँसती हुई-सी आँख चूमे
उसी तरह मैंने उठाई आँख

(दूसरा सप्तक, पृ. १६)

मिश्र जी अपनी कविताओं मे छन्द और प्रतीक का प्रयोग व्यावहारिक रूप में करते हैं, वे छन्दों को कविता के लिए आवश्यक मानते हैं, छान्दसिक जकड़न को अस्वीकार करते हुए मुक्त छन्द में भी कविताएं लिखने के पक्षधर हैं। कविता छांदसिक लय के बिना केवल श्रव्य मात्र रह जाती है। मिश्र जी गद्य में भी तुक और लय का संयोजन को बना कर रखते हैं -

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें
यह गीत गजब का है, ढाकर देखें,
यह गीत जरा सूने में लिखा था,
यह गीत जरा पूने में लिखा था,
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है।
यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
जी हाँ यह मसान में भूत जगाता है।

मिश्र जी का प्रतीक विधान अल्प मात्रा में है, इसका कारण अप्रस्तुत योजना का व्यापक प्रयोग है। सांस्कृतिक और प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग ही काव्य में देखे जा सकते हैं। सामाजिक मान्यताओं, मिथकों, विश्वासों आदि को कवि प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है -

चाहता हूँ इससे पीछा छूटे
तो टूटे कोई नया तारा
किसी अनजाने आकाश में
लगाकर महानाश में
डुबकी
किसी नई देह का मोती पाऊँ।

(अँधेरी कविताएं, पृ. ११८)

भवानीप्रसाद मिश्र जी का बिम्ब विधान शिल्प-सौंद्रय में वृद्धि करने वाला है। इनके काव्य में वस्तु बिम्ब, अलंकृत बिम्ब, मानस बिम्ब और इंद्रिय बिम्बों को संवेदना को प्रभावी ढंग अभिव्यक्ति करते देखा जा सकता है। गतिशीलता को धारण किए हुए ये बिम्ब वर्ण्य विषय और घटनाओं के प्रसंगों को प्रवाह प्रदान करते हैं। जीवन जगत के विचारों और व्यावहारों को सम्पूर्णता के साथ चित्रित करते हैं। श्रावणिक बिम्ब (इंद्रिय) का अद्भूत उदाहरण में गति और क्रिया को देखा जा सकता है-

मैं सन्नाटा हूँ फिर भी बोल रहा हूँ,
मैं शांत बहुत हूँ फिर भी ढोल रहा हूँ,
यह सर-सर यह खड़-खड़ सब मेरी है,
है यह रहस्य मैं इस्को खोल रहा हूँ।

(दूसरा सप्तक, पृ.११)

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य की नई कविता में भवानीप्रसाद मिश्र का उदय संवेदना की नवीनता के प्रस्तोता के रूप में होता है। समाज, समय की प्रतिबद्धता और साहित्य के समन्वय के कौशलपूर्वक संयोजन को कवि ने मुख्य आधार माना है। समकालीन स्थितियों के विपरीत होते हुए भी इन्होंने अपने रचनात्मक दायित्व को बड़े संयम के साथ निभाया।

संदर्भ-सूची :

१ गीत फरोश	भवानीप्रसाद मिश्र
२ चकित है दुःख	भवानीप्रसाद मिश्र
३ अँधेरी कविताएं	भवानीप्रसाद मिश्र
४ गाँधी पंचशती	भवानीप्रसाद मिश्र
५ बुनी हुई रस्सी	भवानीप्रसाद मिश्र
६ खूशबू के शिलालेख	भवानीप्रसाद मिश्र
७ व्यक्तिगत	भवानीप्रसाद मिश्र
८ अनाम तुम आते हो	भवानीप्रसाद मिश्र
९ परिवर्तन जिए	भवानीप्रसाद मिश्र
१० त्रिकाल संध्या	भवानीप्रसाद मिश्र
११ शरीर कविता फूल और फसलें	भवानीप्रसाद मिश्र
१२ तूस की आग	भवानीप्रसाद मिश्र
१३ हिंदी कविता : आधुनिक आयाम	डॉ. रामदरश मिश्र
१४ दूसरा सप्तक	संपा. अज्ञेय
१५ तार सप्तक	संपा. अज्ञेय
१६ हिंदी के लोकप्रिय कवि: भवानीप्रसाद मिश्र	संपा. विजय बहादुर सिंह
१७ भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य-संसार	कृष्णदत पालीवाल
१८ नया हिंदी काव्य	शिवकुमार मिश्र

पत्रिकाएं -

नयी दुनिया, २५ फरवरी, १९७३

गगनांचल, वर्ष ८, अंक-२-३ (संयुक्तांक), वर्ष १९८५